Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

# क्षेत्र के आधार पर स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन

**डॉ0 नीता सिंह**
शोध निर्देशिका
असिस्टेण्ट प्रोफेसर
राजा श्रीकृष्ण दत्त पी0जी0 कालेज,
जौनपुर (उ0प्र0)

**रूपम सिंह**
शोधकर्त्री
राजा श्रीकृष्ण दत्त पी0जी0 कालेज,
जौनपुर (उ0प्र0)सम्बद्ध
वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय,
जौनपुर (उ0प्र0)

**Article Info**

Volume 4, Issue 3

Page Number : 62-69

**Publication Issue :**

May-June-2021

**Article History**

Accepted : 01 June 2021

Published : 15 June 2021

सारांश – प्रस्तुत समस्या कथन क्षेत्र के आधार पर स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन किया गया हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जाता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में वाराणसी मण्डल के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालयों में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग की समस्त छात्राएँ जनसंख्या के रूप में है। इस अध्ययन हेतु वाराणसी मण्डल के जनपद जौनपुर एवं जनपद गाजीपुर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में स्थित महाविद्यालयों में अध्ययनरत् 400 छात्राएँ न्यादर्श के रूप में सम्मिलित की गयी है। प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध के अध्ययन में छात्राओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का पता लगाने हेतु आर.एल. भारद्वाज द्वारा निर्मित 'सोशियो–इकोनॉमिक स्टेट्स स्केल' जो नेशनल साइकोलॉजिकल कार्पोरेशन, आगरा द्वारा पब्लिशिड है का प्रयोग किया गया है। शैक्षिक उपलब्धि का मापन हेतु स्नातक स्तर पर 'शैक्षिक उपलब्धि मापनी' का मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला में मापनी/उपकरण उपलब्ध न होने के कारण शोधकर्त्री द्वारा स्नातक स्तर के (बी0ए0/बी0एस–सी0) की तृतीय वर्ष की छात्राओं को सम्मिलित किया गया जिसमें पिछले दो वर्षों की परीक्षा में प्राप्त प्राप्तांकों के प्रतिशत को शैक्षिक उपलब्धि के रूप में सम्मिलित किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण एवं उनकी व्याख्या हेतु एनोवा एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि – स्नातक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर का शहरी क्षेत्र की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि एक–दूसरे के समान है। अतः शहरी क्षेत्र की छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक–आर्थिक स्तर का प्रभाव नहीं पाया गया जबकि स्नातक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर का ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर है अर्थात् ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं का सामाजिक–आर्थिक स्तर उनके शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है।

की–वर्ड– स्नातक स्तर, शहरी, ग्रामीण, छात्राएँ, सामाजिक–आर्थिक स्तर, शैक्षिक उपलब्धि, प्रभाव।

**Copyright: ©** the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

**भूमिका–** बालिकाओं की साक्षरता दर पुरुषों से काफी कम है। अतः बालिका शिक्षा के उन्नयन के लिए विशेष तथा अतिरिक्त उपाय किये जाने चाहिए बालिकाओं को शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए केन्द्र एवं राज्य सरकारों ने अनेक प्रयास किये हैं तथा कई योजनाओं को संचालित किया जा रहा है। बालिकाओं के लिए अलग से स्कूल खोले गये बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए कई योजनाएँ चलायी गयी तथा समाज में बलिका शिक्षा के लिये जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से प्रचार प्रसार किया गया। बालिकाओं को स्कूल में निःशुल्क प्रवेश, निःशुल्क किताब, निःशुल्क प्रवेश एवं छात्रवृत्तियां प्रदान की गयी।

भारत के विभिन्न प्रान्तों में बालिका साक्षरता दर पुरुषों की साक्षरता दर से काफी कम है। विगत् दशकों से प्राप्त साक्षरता के आंकड़ों से पता चलता है कि वर्ष 1951 में बालिका साक्षरता दर 8.86% थी वर्ष 2011 में 65.5% पहुँच गयी पर पुरुषों की तुलना में अभी भी 16.7% कम है।

अगर सामान्य शिक्षा केवल पुरूषों या केवल बालिकाओं को देनी पड़े तो इसका अवसर बालिकाओं को ही दिया जाना चाहिए। बलिका शिक्षा किसी भी राष्ट्र की प्रगति के लिए आवश्यक है। दुःख की बात यह है कि आज 21वीं शताब्दी में भी हमारे देश में ऐसे अनेक अभिभावक, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में जो बालिकाओं को शिक्षित करना व्यर्थ मानते हैं।

सरकार द्वारा ग्रामीण अंचल में चलाये जा रहे आपरेशन – आपरेशन ब्लैक बोर्ड परियोजना, इन्दिरा महिला योजना, बालिका समृद्धि योजना, स्वर्णिम योजना, किशोरी शक्ति योजना, महिला स्वयंसिद्ध योजना, जननी सुरक्षा योजना, अल्पसंख्यक बालिकाओं की नेतृत्व क्षमता विकास योजना, जैडर बजटिंग तथा जैंडर डाटा, महिला और सूक्ष्म वित्तपोषण, प्रियदर्शिनी योजना, गाँव की बेटी योजना, राष्ट्रीय महिला आयोग, स्वधार योजना, जागरूकता सृजन कार्यक्रम, केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड, अल्प आवास गृह योजना, राष्ट्रीय महिला कोष, राष्ट्रीय मातृत्व लाभ योजना, स्वशक्ति योजना की जानकारी उनको बाल विकास परियोजना की सहायता से कार्यकत्री एवं सहायिकाओं द्वारा दी जा रही है जिससे उनके अन्दर भी नारी सशक्तिकरण एवं वृत्ति की भावना जाग्रत हुई है।

भारतीय समाज में निःसन्देह बालिकाओं की स्थिति में आगे बढ़ते हुए समय के साथ प्रगति हुई है, किन्तु जब हम पीछे की तरफ देखते है तो इस प्रगति की दर अपेक्षाकृत कम है। किसी व्यक्ति की सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति के निर्धारण में शिक्षा व व्यवसाय का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इसी क्रम में किसी राष्ट्र की शिक्षित बालिकाएँ उसकी सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति की निर्धारक होती है तथा इस प्रगति में उनका प्रमुख योगदान होता है। महिला शिक्षा व व्यवसाय की प्रगति दर में ग्रामीण बालिकाओं की अपेक्षा शहरी शहरी बालिकाएँ अधिक सक्रिय तथा जागरूक है।

जहाँ एक तरफ सामाजिक–आर्थिक स्तर से उच्च बालिकाएँ शिक्षा में आगे बढ़ रही है वहीं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की बालिकाओं को संसाधनों की कमी के साथ–साथ उनको शिक्षा में आगे बढ़ने के रोकने हेतु हमारे समाज में बनायी गई रीति–रिवाजों, कुरीतियों एवं पाबन्ध आदि उनके शैक्षिक कार्यों में बाधा बनती है साथ ही उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर विशेष प्रभाव डालती है। अतः अध्ययनकर्त्री अपने अध्ययन में यही देखने का प्रयास किया है कि क्या सामाजिक–आर्थिक स्तर छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है या नहीं?

**समस्या कथन–**

क्षेत्र के आधार पर स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन।

**अध्ययन का उद्देश्य–**

1. स्नातक स्तर के शहरी क्षेत्र की छात्राओं की सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
2. स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।

**अध्ययन की परिकल्पनाएँ**

$H_{01}$ स्नातक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर का शहरी क्षेत्र की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

$H_{02}$ स्नातक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर का ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**अध्ययन में प्रयुक्त शोध विधि**

प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जाता है।

**जनसंख्या–**

प्रस्तुत शोध अध्ययन में वाराणसी मण्डल के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालयों में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग की समस्त छात्राएँ जनसंख्या के रूप में है।

**न्यादर्श/न्यादर्श का चयन**

इस अध्ययन हेतु वाराणसी मण्डल के जनपद जौनपुर एवं जनपद गाजीपुर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में स्थित महाविद्यालयों में अध्ययनरत् 400 छात्राएँ न्यादर्श के रूप में सम्मिलित की गयी है।

**प्रयुक्त उपकरण**

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध के अध्ययन में छात्राओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का पता लगाने हेतु आर.एल. भारद्वाज द्वारा निर्मित 'सोशियो–इकोनॉमिक स्टेट्स स्केल' जो नेशनल साइकोलॉजिकल कार्पोरेशन, आगरा द्वारा पब्लिशिड है का प्रयोग किया गया है। शैक्षिक उपलब्धि का मापन हेतु स्नातक स्तर पर 'शैक्षिक उपलब्धि मापनी' का मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला में मापनी/उपकरण उपलब्ध न होने के कारण शोधकर्त्री द्वारा स्नातक स्तर के (बी0ए0/बी0एस–सी0) की तृतीय वर्ष की छात्राओं को सम्मिलित किया गया जिसमें पिछले दो वर्षों की परीक्षा में प्राप्त प्राप्तांकों के प्रतिशत को शैक्षिक उपलब्धि के रूप में सम्मिलित किया गया है।

**सांख्यिकी विश्लेषण–**

आँकड़ों के विश्लेषण एवं उनकी व्याख्या हेतु एनोवा एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया।

**आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या**

**1. स्नातक स्तर के शहरी क्षेत्र की छात्राओं की सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन**

**$H_1$ स्नातक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर का शहरी क्षेत्र की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर है।**

**$H_{01}$** स्नातक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर का शहरी क्षेत्र की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**सारणी सं0 1**

***स्नातक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर का शहरी क्षेत्र की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर का एफ–मान***

| स्रोत | स्वतंत्रांश (df) | वर्ग योग (SS) | माध्य वर्ग योग (MS) | प्रसरण–मान (F-Value) |
|---|---|---|---|---|
| समूहों के मध्य | 2 | 151.09 | 75.54 | 1.11* |
| समूहों के अन्दर | 198 | 13519.37 | 68.28 | |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| कुल | **200** | **13670.46** | **143.82** | |

*0.05 स्तर पर असार्थक

स्नातक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर का शहरी क्षेत्र की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य F–मान 1.11 जो .05 पर असार्थक है। अतः शू0 परि0 ''स्नातक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर का शहरी क्षेत्र की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है'', .05 स्तर पर स्वीकृत की जाती है। परिणामतः स्नातक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर का शहरी क्षेत्र की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर नहीं हैं स्नातक स्तर के शहरी क्षेत्र की छात्राओं की सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव नहीं पाया गया।

**2. स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन**

**$H_2$ स्नातक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर का ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर है।**

**$H_{02}$** स्नातक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर का ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**सारणी सं0 2**

***स्नातक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर का ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर का एफ–मान***

| स्रोत | स्वतंत्रांश (df) | वर्ग योग (SS) | माध्य वर्ग योग (MS) | प्रसरण–मान (F-Value) |
|---|---|---|---|---|
| समूहों के मध्य | 2 | 308.03 | 154.02 | 5.06* |
| समूहों के अन्दर | 197 | 5990.84 | 30.41 | |
| कुल | **199** | **6298.87** | **184.43** | |

*0.05 स्तर पर सार्थक

स्नातक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर का ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य F–मान 5.06 जो .05 पर सार्थक है। अतः शू0 परि0 ''स्नातक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर का ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है'', .05 स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। परिणामतः स्नातक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर का ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर हैं।

**सारणी सं0 2.1**

***स्नातक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर का ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर का टी–अनुपात***

| क्र. सं. | विद्यालय | N | M | $\sigma_D$ | D | t-value |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | उच्च | 11 | 62.47 | 1.72 | 4.94 | 2.87* |
| | औसत | 147 | 57.53 | | | |
| 2. | उच्च | 11 | 62.47 | 1.87 | 5.92 | 3.17* |
| | निम्न | 42 | 56.55 | | | |
| 3. | औसत | 147 | 57.53 | 0.96 | 0.98 | 1.01 |
| | निम्न | 42 | 56.55 | | | |

*0.05 स्तर पर सार्थक

उच्च, औसत एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाली ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान क्रमशः 62.47, 57.53 एवं 56.55 है। उच्च एवं औसत तथा उच्च एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाली ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य टी–अनुपात मान 0.05 स्तर पर दिये गये मान से अधिक है, जो सार्थक है। औसत एवं निम्न तथा औसत एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाली ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर है। औसत एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाली ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य टी–अनुपात मान 0.05 स्तर पर दिये गये मान से कम है, जो असार्थक है। औसत एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाली ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है। अतः सामाजिक–आर्थिक स्तर का ग्रामीण क्षेत्र वर्ग की छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है।

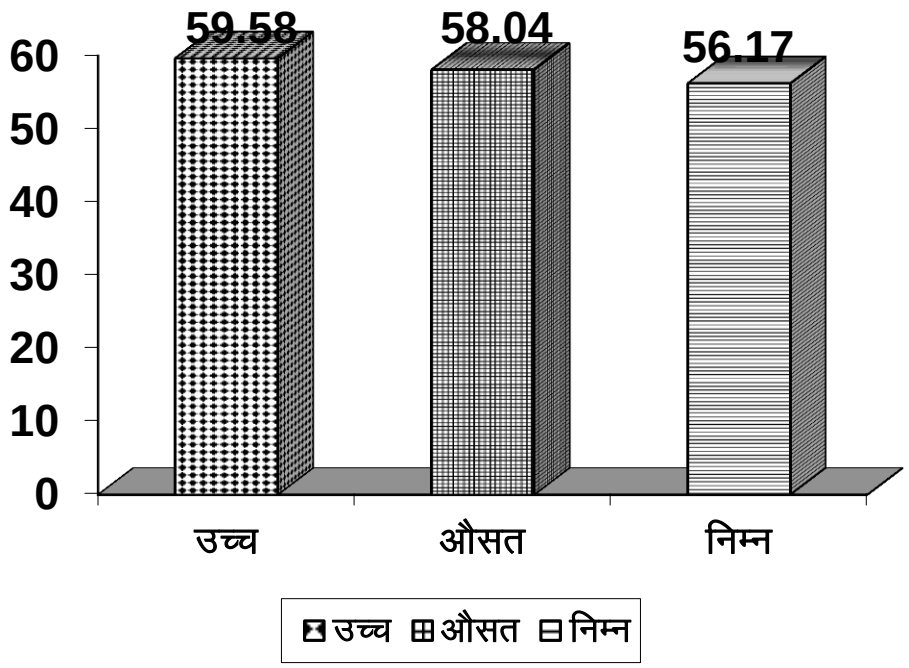


**निष्कर्ष–**

स्नातक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर का शहरी क्षेत्र की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि एक–दूसरे के समान है। अतः शहरी क्षेत्र की छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक–आर्थिक स्तर का प्रभाव नहीं पाया गया। पूर्व अध्ययन **केन, पामेला ई. डेविस (2005)** के अध्ययन में परिवार की आर्थिक स्तर का बच्चों के शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया तथा अभिभावक के शैक्षणिक क्षमता का बच्चों के शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धा पाया गया जबकि अप्रत्यक्ष रूप से अभिभावक से उम्मीद एवं अभिभावक व्यवहार का भी प्रभाव पाया गया। **बसंल, थंड एवं जसवाल (2006)** ने अध्ययन में प्राप्त हुआ कि घर का स्वस्थ वातावरण उच्च उपलब्धि प्राप्तकर्त्ताओं की उपलब्धि प्रेरणा से सकारात्मक रूप से जुड़ा हुआ है। यह पाया गया कि जिस घर के वातावरण की गुणवत्ता बिगड़ी थी, उनकी उपलब्धि प्रेरणा का स्तर भी बिगड़ा हुआ था। आन्तरिक नियंत्रण की स्थिति, घर के वातावरण की गुणवत्ता से महत्त्वपूर्ण एवं सकारात्मक रूप से सहसम्बन्धित थी। आन्तरिक नियंत्रण की बाह्य स्थिति उपलब्धि से महत्त्वपूर्ण रूप से सम्बन्धित नहीं थी और आन्तरिक नियंत्रण की स्थिति गुणवत्ता से।

स्नातक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर का ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर है अर्थात् ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं का सामाजिक–आर्थिक स्तर उनके शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक–आर्थिक स्तर का प्रभाव पड़ता है। पूर्व अध्ययन **त्रिपाठी (2002)** ने अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि सामाजिक आर्थिक स्तर से प्रभावित होती है। छात्राओं के शैक्षिक

पिछड़ेपन पर सामाजिक एवं पारिवारिक कारकों का सार्थक प्रभाव पड़ता है। **पिरिडा (2005)** ने अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष थे कि उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर और शैक्षिक उपलब्धि में महत्त्वपूर्ण सकारात्मक सहसम्बन्ध था। जो छात्र उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर से सम्बन्धित थे वह निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्रों से शैक्षिक उपलब्धि में अधिक थे।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची


- केन, पामेला ई. डेविस (2005). द इन्फ्लूएन्स ऑफ पैरेन्ट एजूकेशन एण्ड फैमिली इन्कम ऑन चाइल्ड एचिवमेन्ट : द इन्डाइरेक्ट रोल ऑफ पैरेन्टल एक्सपेटेशन्स एण्ड द होम इन्वायर्मेन्ट, जर्नल ऑफ फैमिली साइकोलॉजी, द अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन, वाल्यूम–19, नं0 2, पृ0 294–304ए
- बसंल, एस0; थंड, एस0के0 एवं जसवाल, एस0 (2006). रिलेशनशिप बिटविन क्वालिटी ऑफ होम इनवायरमेण्ट, लोकस ऑफ कण्ट्रोल एण्ड एचिवमेण्ट मोटिवेशन एमंग हाई एचिवर अर्बन फीमेल एडोलेसेन्ट्स, J. Hum. Ecal. 19(4), पृ0 253–257
- त्रिपाठी, अरूणा (2002). छात्राओं में शैक्षिक पिछड़ेपन के मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, एवं पारिवारिक कारकों का शैक्षिक अध्ययन, पी–एच0डी0 शोध, वी0एस0एस0डी0 कालेज, कानपुर।
- पिरिडा, ए.के. (2005). इम्पैक्ट ऑफ सोशियो–इकोनॉमिक स्ट्रेटस ऑफ द एकेडेमिक परफार्मेन्स ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स। अनपब्लिशड एम0फिल0 डिजर्टेशन, कुरूक्षेत्र यूनिवर्सिटी।